REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

नारी जीवन का यथार्थ

डॉ.विमल ग्यानोबा सूर्यवंशी

प्रस्तावनाः

नारी पीडा को हिन्दी साहित्य में अनेक कवियों ने, लेखक साहित्यकरों ने बडे अनुठे से दर्शाया है। १९३४ में जन्म कवि केदारनाथ सिंह हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार है। वे अज्ञेय द्वारा संपादीत तीसरे शतक के कवि है। इनके काव्य में नारी मन की अभिव्यक्ती हुई है। विशेषतः नारी प्रेयसी के रूप में उनके काव्य में विद्यामान है।

स्त्री जीवन में बहुत कुछ सकारात्मक कार्य करना चाहती है। पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर समाज के लिए काम करना चाहती है किंतु पुरुष उसे अपनी बराबरी का दर्जा देना उचित ही नहीं समझता है। स्त्रियों की समस्याओं को लेकर सदियों से अध्ययन एवं विचार मंथन होता आया है, क्योंकि स्त्री ही समाज का दर्पण है। उनकी स्थिति से ही समाज की सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान आनेवाली पीढ़ी प्राप्त करती आ रही है।

भारतीय समाज व्यवस्था, वर्णव्यवस्था पर आधारित है, वर्णव्यवस्था के कारण अनेक महिला का जीवन अत्यंत दीन–हिन है। 'दलित महिलाओं की स्थिति तो और भी दयनीय है। उनके साथ आज भी उच्च जाती के लोग पशुतुल्य व्यवहार करते है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से आज तक स्त्रियों पर अत्याचार होते आ रहे है। यह पुरुष प्रधान समाज है। पति के अन्याय, दहेज के कारण नारी का शोषण तथा बलत्कर की समस्या से नारी को जुझना पडता है। शिक्षा, को प्रसार–प्रचार नारी का आर्थिक स्वावलंबन तथा नरी को संरक्षण देनेवाले कानून होने के बाद भी नारी पर होनेवाले अन्याय अत्याचारों में कमी नहीं आयी है।

नारी का जन्म से लेकर मृत्यु तक अत्यचार के चक्र चलता आ रहा है। उसका अपहरण करके, लैंगीक शोषण किया जात है। नारी पर होनेवाले अत्यचारों में एक अत्यचार बलात्कार है, जो प्राचीन काल से हमारे समाज में चला आ रहा है। बलात्कर नारी की इच्छा के विरुद्ध होता है। पर नारी केअयु की कोई मर्यादा नीं होती है। नारी अपने जीवन में पुरुष के बंधन में मुक्त न हो इस तहर की व्यवस्था प्राचीन काल में की गयी है। अर्य स्वतंत्रत ने स्त्री की व्यक्ति स्वतंत्र भी छीन लिया है। किन्तु यह बात सभी भूल जाते है कि समाज में स्त्री महत्वपूर्ण भूमिक निभाती है। संसार रूपी रथ के लिए एक पहिया पुरुष है तो दूसरा पहिया स्त्री है जिसके कारण संसार का रथ ठिक चल सके ।

समकालीन स्त्री परामर्श विमर्श युरोप और अमरीका से चली नारी जागरण की लहर का परिणाम है। जैसे जैसे प्रौद्योगिकी, आधुनिक जीवन शैली, खुलेबाजार का वैश्वीकरण हुआ, प्रचार–प्रसार का व्यापक मीडिया–तंत्र फैला, वैसे वैसे नारी सौंदर्य और उसके विविध रूपों को उघाडकर बाजारवाद की प्रतियोगिता को लोकप्रिय बनाने की तमाम तरकीबे सामने आई। नारी का महत्व मीडिया, सिनेमा, हाईटेक विकास के साथ तेजी से जुडा। स्त्री मांसलता की विविध अभिव्यक्तियों को उभरा गया। साहित्य के क्षेत्र में भी विदुषी लेखिकाओं ने नारी स्वतंत्रता के

विषय को जोर–शोर से उठाया। हिन्दी में कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडेय, मन्नू भंडारी, कर्तुलन हैदर आदि, तमिल में शंकरी, मलयालम में कमलादास, अंग्रेजी में अरुन्धती राय, बंगला में महाशेता देवी आदि लेखिकाओं ने स्त्री की अस्मिता और उसके विविध सामाजिक पहलुओं को लेकर लिखा। पुरुष प्रधान सामाजिक दुरुहताओं के कारागार से नारी को मुक्त कराने का आंदोलन सीमित दयरे में चलता रहा, इससे अपेक्षित परिणाम नहीं निकला। यह जरूर है कि पढी लिखी औरतों को नर नारी विमर्श की हवा ने आंदोलित किया। उनमें से बहुतों ने विद्रोहत्मक कदम उठाया लेकिन उससे परिवार में टूटन, बिखराव, मानसिक क्लेश और विघटन की तस्वीर अत्यन्त दुखद रही।

भारतीय समाज रचना अन्य देशों की तुलना में बिल्कुल भिन्न है। नारी जब वैवाहिक बंधनों में बंधती हैं तो वेद की ऋचाएँ उसे पुरुष का अर्धभाग दे देती है। नारी पुरुष के साथ वादों से सप्तपदी सम्पूर्ण होती है। इसे में नारी ही पुरुष के साथ उसके परिवार से संस्कारों रश्मो–रिवाजो से बंधने पर विवश होती है। उससे टूटने या छूटने का अर्थ है सप्तपदी के वादों को तोडना जिसे सहन नहीं किया जाता और नारी को अथर्म के खूंटे से बांध दिया जाता है और उसके चारों ओर लक्ष्मण रेखा खींच दी जाती है कि उसके भीतर ही रहना है। बाहर निकलने का अर्थ है संबंधो का टूटना और परिवार का बिखराव। पुरुष हमेशा से नारी को सौंदर्य और प्रेम की मांसल कठपुतली समझता रहा है। उसके अहम अकांक्षा और आज्ञा की बैसाखियों पर ही स्त्री का जीवन निर्भर रहता है। उससे मुक्त होकर स्त्री का जीवन अस्तित्व बौना और संघर्षमय हो जाता है। वह चाहे जितना तीव्र गति से अपने पंख खोले, चाहे जितनी दिशाओं में उड़ती रहे, किन्तु सुनिश्चित नीड़ ही उसका अंतिम पड़ाव है। इसलिए हमारे देश में स्त्री परामर्श स्त्री स्वतंत्रता, नारी स्वाधीन चेतना, उन्मुक्त यौनाचार एक बहस बनकर रह गया है। कुछ हुआ भी तो यौन–उचिता के विरुद्ध एक कुंठित सुप्त विद्रोह उभरता है। आज के संदर्भ में भगिनी भाव बहुत कम रह पाता है। यदि रहता भी है तो थोड़े समय में ही विलुप्त हो जाता है। इसलिए नारी परामर्श का आंदोलन क्षीण पड गया है।

कभी–कभी यह आंदोलन उरुष षडयंत्र का शिकार बना और देह आनन्द रस के उन्माद के कारण हास्यास्पद हो गया है। स्त्री विमर्श की यह विडम्बना ही है कि नारी एकता की सारी कोशिशे, वादे, कसमें छिन्न भिन्न हो जाती हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि जब सारी बंदिशे स्त्री देह पर ही केन्द्रीत है तब स्त्री की आजादी देह की आजादी से भिन्न नहीं हो सकती बल्कि औरत की आजादी देह से शुरु होती है। उपभोक्ता बाजार ने औरत को एक वस्तु, एक पदार्थ के रूप में मान लिया है। और इसी कारण औरत की गरिमा, मर्यादा मानवीयता के स्तर पर कलंकित हुई है। स्त्री परामर्श आंदोलन की एक बडी विडम्बना यह है कि उसमें शहरी सभ्यता में पली, पढी लिखी, आधुनिकता में सनी उच्च वर्ग की स्त्रियाँ ही अधिकांशत; अपनी आवाज बुलंद कर पाती है।

नगरों की बहुत सारी पडी लिखी सामाजिक सरोकार से जुडी उच्च वर्ग या मध्यम वर्ग अथवा निम्न मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ अथवा अशिक्षित, अल्प शिक्षित स्त्रियाँ इस आंदोलन से प्रायः अलग रहती है। यह एक सच्चाई है कि पश्चिम विशेष कर युरोप के स्त्री विमर्श का एजेंडा, दक्षिण पूर्व देशो विशेषकर भारत में हो रहे स्त्री विमर्श के एजेंडे से मेल नहीं खाता और उनका एजेंडा, हमारा एझेडा नहीं बन सकता । स्त्री विमर्श से जुडी कतिपय बुद्दिवादी स्त्रियाँ मेरे इस कथन से क्षुब्ध या क्रोध हो सकती हैं किन्तु वास्तविकता से आँखे नहीं मूंद सकती। फिलहाल भारत में स्त्री विमर्श की जो स्थिति है उसका आकलन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समकालीन परिदृष्य में नारी विमर्श से हस्तक्षेप या इन्कार करना संभव नहीं। भारतीय समाज में नारी विमर्श का असर फैल रहा है और परिवार अथवा सम्बन्धों के विकराव और टुटन का क्रम देखा जा सकता है।

भाषा, साहित्य, राजनीति, समाज व्यवस्था, सार्वजनिक जीवन, दर्शन, चिंतन, धर्म सभी स्त्री विमर्श की चपेट में आ गए है। और आज के परिवेश में इसका प्रभाव सर्वत्र बखूबी देखा जा सकता है। नारी विमर्श की धारा एकदिन इतनी प्रखर और उद्वेलित प्रवाहयुक्त होगी कि स्त्री के प्रती हीन मानसिकता को बहाकर दूर तक ले जाएगी। तभी नारी विमर्श आंदोलन से नारी स्वातंत्र्य को सबल आधार मिलेगा।

एड्रियन रिच का नारी की स्वतंत्रता पर कथन दृष्टव्य है– 'यदी हम नारीवाद को एक नैतिकी, एक पद्धती सोच के एक से अधिक कठिन और उसी के कारण मानवीय जीवन कि दशा दिशा के प्रति अधिक उत्तरदायी तरीके के रूप में समझें तो हमें एक ऐसे आत्म ज्ञान की जरूरत होगी जो केवल संपूर्ण स्त्री अनुभाव के प्रति एक सतत उत्कृष्ट अवदान के द्वारा ही विकसित हो सकता है।'

यहाँ इस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि बिना पुरुष सहयोग के स्त्री विमर्श का कोई भी किसी तरह का आंदोलन सफल नहीं हुआ और न होगा। योरोप के देशो में अकेले स्त्रियों के दम खम पर जो भी इस तरह के नारी मुक्ति सम्बन्धी आंदोलन हुए वे थोडे समय में ही अपना प्रभाव खो दिए। ऐसे आंदोलनों की नियामक स्त्रियों को इसका खामियाजा भुगतना पडा। उनकी असफलता पर बहुत कम लोगों ने अफसोस प्रकट किया या उन्हें सांत्वना दी। भारतीय समाज नारी विमर्श के पैमाने को स्वीकार नहीं कर पाता । क्योंकि हजारों वर्षों से समाज में नारी की जो स्थिति बनी हुई है उससे अलग कोई भी व्यवस्था उसे पसन्द नहीं नारी स्वतंत्र होकर अपने अनुसार परिवार चलाए या परिवार में रहें । प्रायः देखा गया है कि नारी स्वातंत्र्य को पुरुष वर्ग ने अपने स्वार्थ से जोड लिया और ऐसी असंख्य घटनाएँ घटी है जहाँ नारी विमर्श से जुडी हुई स्त्रियाँ अपने को प्रताडित होने से बच नहीं सकीं। इसका कारण नारी एकता और अपने भीतर हौसला इच्छा शाक्ति की कमी है।

इस सदी के सातवें, आठवें दशक में महानगर में जीने के लिए फ्लैट, चाल में कमरा या झोपडी का जुगाड़ करने तथा अपने परिवार को पालने के लिए स्त्री नौकरी करने लगी। किन्तु जब सदी के अंत तक नारी विमर्श की हवा बहने लगी तो स्त्री की महत्वाकांक्षा भी बढने लगी और देखते देखते वह विज्ञान, तकनीकी, उद्योग, शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में पुरुष के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगी । वह अपने लक्ष्य में तेजी से आगे बडी और अनेक जगह तो पुरुष को पीछे छोड दिया। 'एक पत्नी के नोटस' कहानी में नायिका अपने पति को टक्कर देती है। पति आइ.ए.एस. आफिसर है। पत्नी कॉलेज की प्रिंसिपल पति के मित्र बडे तबके के हैं तो पत्नी के भी मित्र, महिलाएँ बडे बडे परिवारों की है। इससे कोई हर्ज नहीं कि पति के साथ पत्नी भी उच्च वर्ग की जिन्दगी बिताने में स्वतंत्र है। पुरुष का भोगना और स्त्री का भुगतान यह आज की स्त्री को मान्य नहीं, वह अब इसके विरोध में खड़ी है। कृष्णा सोबती का उपन्यास 'मित्रो मरजानी' काफी चर्चित रहा है। उसमें नारी को घुटन और उपेक्षा के जीवन से बाहर निकल कर स्वतंत्र परिवेश में जीवन यापन करने के लिए संदेश है। सोबती की एक अन्य कहानी 'ए लडकी' में वह प्रगत जीवन जीने के लिए यत्न करती है। उसका वक्त तब सुधरेगा जब वह कमाने लगेगी और अपने पैरों पर खडी होगी।

वह बडी–बडी कम्पनियों में मैनेजर, रिसेप्शनिष्ट, होटलों में काल गर्ल्स, कैबरे डान्सर, बार वनिता के रूप में काम करने लगी। वह कहती है– तुम स्वाधीन हो, लडकी ताकत है, सामर्थ्य है, शक्ति है।

स्वदेश भारती के उपन्यासों 'औरतनामा' 'शवयात्रा', 'यातना शिविर', 'नगर बन्दु' आदि में नारी को पुरुष पात्र से अधिक चतुर, सशक्त प्राणावंत वर्णित किया गया है। इन उपन्यासों नारी संघर्ष, नारी शक्ति, नारी सामर्थ्य को अच्छे से उजागर किया गया है। बाबरी मसजिद ध्वंस किए जाने के संदर्भ में दुढनाथ सिंह की कहानी 'आखिरी कलाम' में साम्प्रदायिकता की आग जलती, छार होती मानवियता को दर्शाया गया है।

यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि बीसवी इककीसवी शताब्दी की स्त्री ने साहस और उत्साह का बेजोड परिचय दिया और पुरुष दासता से अपने को मुक्त किया। १८५७ की क्रांति में झांसी की रानी, लक्ष्मी बाई १८५७ बुंदेलखंड में, बेगम हजरत महल १८५६ अवध में अंतिम सांस तक संघर्ष करती रही। पुरुषों से आगे बढ़कर क्रांति का प्रदीप जलाया। उन्नीसवी सदी समाप्त होते होते कुमुदिनी मित्तर, सरला देवी १९०५, एनीबिसेन्ट १९१४, बासन्ती देवी, उर्मिला देवी बाई उमा १९७९, सरोजिनी नायडू १९१३, विजय लक्ष्मी पंडित १९५० ने स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा लगाकर काम किया और सभी को चुल्हा चक्की, चौका से

निकाल कर व्यापक परिवेश प्रदान किये । उन्होंने आज की नारी को दिशा दिखायी, उसे स्वतंत्र होकर आधुनिक जीवन को आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

भारतीय स्त्री स्वंतत्रता संग्राम में ही अगली पंक्ति पर नहीं रही बल्कि सांस्कृतिक चेतना, कला, भाषा, साहित्य में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की। महीयसी महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान कविता के क्षेत्र में, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम मृदुला गर्ग, कर्तनुल हैदर, मृणाल पांडेय आदि ने उल्लेखनीय कार्य किया है।